CITY भास्कर
dainikbhaskar.com

जैम्स नॉलेज . ब्लू सफायर

विभिन्न श्रेणियों वाला प्राकृतिक नीलम

पिछले अंक में हमने नीलम के कुरूविंद समूह रत्न के बारे में पढ़ा। आज हम आपको बताएंगे नीलम की विभिन्न श्रेणियों के बारे में।

इसमें पाए जाने वाले अंतरावेशी (इन्क्लूजंस) भी कमोबेश इन दोनों रत्नों के समान ही होते हैं। फिंगर प्रिंट, क्रिस्टल्स खासतौर से नेगेटिव क्रिस्टल्स तीन दिशात्मक सूइयों के समान टाइल नीलम में बहुतायत से पाई जाती है,जिसे रत्न विज्ञान में सिल्क के नाम से जाना जाता है। और यही कारण है कि सिल्क वाले नीलम को पोटा रूप में तराशा जाए तो तारांकन प्रभाव (स्टार इफेक्ट) भी देखने को मिलता है।

मीनू बृजेश व्यास
असिस्टेंट डायरेक्टर , जैम टेस्टिंग लेबोरेटरी
gtl@gjepcindia.com

नीलम भी माणिक्य एवं पुखराज की भांति आग्नेय चट्टानों खासतौर से मार्बल एवं डोलोमाइट के निक्षेपों में पाया जाता है। पे बल रूप में (जल स्रोतों के आस-पास मिलने वाला) पाया जाने वाला नीलम उच्च श्रेणी का होता है। प्राप्ति स्थलों में भारत का स्थान सर्वोपरि है क्योंकि कंदर्प नील रंग, स्वच्छता एवं वजनदार उच्च श्रेणी के नीलम भारत के कश्मीर प्रांत की देन हैं। यहां से प्राप्त नीलम अपनी सुंदरता के लिए विश्वविख्यात हैं। किंतु भौगोलिक एवं वर्तमान परिस्थितियों के कारण कश्मीर से नीलम प्राप्ति सुलभ नहीं है। और यहां के कुछ स्रोत तो खाली भी हो चुके हैं। यूं भारत के अन्य स्थान जैसे केरल, उड़ीसा, कर्नाटक आदि में भी नीलम पाया जाता है। किंतु क्वालिटी के अनुसार यह निम्न श्रेणी का होता है। फिर व्यावसायिक तौर पर बाजार में उपलब्ध अधिकांश नीलम श्रीलंका से प्राप्त किया जाता है और कश्मीरी नीलम के बाद श्रीलंका के नीलम उत्तम श्रेणी के माने जाते हैं। श्रीलंका के नीलम में जरकिन के क्रिस्टल्स एवं लौंग सिल्क कॉमन इन्क्लूजंस है। अन्य स्रोतों में बर्मा, ऑस्ट्रेलिया, थाईलैंड, मोन्टाना (यू. स्टेट) तंजानिया, केन्या आदि प्रमुख देश हैं।

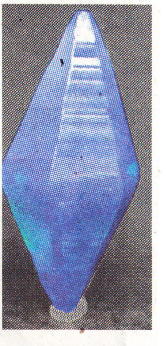

शनि ग्रह के लिए पहने जाने वाला रत्न नीलम आभूषणों में भी अपना प्रमुख स्थान रखता है, इससे बनी मणियां एवं मालाएं भी आभूषण रूप में काम में ली जाती हैं। जड़ाऊ ज्वैलरी खासतौर से डायमंड के साथ में जड़ित नीलम की सुंदरता देखते ही बनती है।